पुनि रामायण पुस्तक अरचै ❀ प्रेम सहित गंधादिक चरचै ॥
ॐनमो नारायण मंत्र भनीजै ❀ तीन आहुती होम करीजै ॥
मन बच कर्म पाप तनु केरे ❀ छूटि जात नहिं आवत नेरे ॥

दोहा--यहि बिधि रामायण विधिहि, जे करिहहिं चितलाय ।
राम धाम ते जाइहैं, संश्रित दुखहिं मिटाय ॥१२॥

जो कछु कारज कहँ कोई जाई ❀ सुमिरि चले सो यह चौपाई ॥
प्रविशि नगर कीजै सब काजा ❀ हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
जो विदेश चाहे कुशलाई ❀ तो यह सुमिरि चलै चौपाई ॥
रथ चढ़ि सीय सहित दोउ भाई ❀ चले बनहिं अवधहिं शिरनाई ॥
भूत पिशाच जाहि जब लागे ❀ यह सोरठा पढ़ै सो भागे ॥

सोरठा-- बन्दौं पवनकुमार, खल बन पावक ज्ञानघन ।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचाप धर ॥१॥

शत्रु निवारण चहौ जो भाई ❀ भावसहित जपु यह चौपाई ॥
जाके सुमिरण ते रिपुनाशा ❀ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥
यह चौपाई जपै जो कोई ❀ अन्न आदि दुख ताहि न होई ॥
विश्व भरण पोषण कर जोई ❀ ताकर नाम भरत अस होई ॥
जो उत्सव चह विविध प्रकारा ❀ करु यह चौपाई अनुसारा ॥
जबते राम ब्याहि घर आये ❀ नित नव मंगल मोद बधाये ॥
जो चाहौ जगमहँ जय भाई ❀ स्थिर ह्वै जपु यह चौपाई ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके ❀ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
है सबभाँति कार्य जगमाहीं ❀ रामायण सो सब है जाहीं ॥

दोहा--सकल भाँति मनकामनो, यह दोहा दातार ।
रामायण महँ खोजकरि, करु या को अनुसार ॥१३॥

वह शोभा सु समाज सुख, कहत न बनै खगेश ।
बरणै शारद शेष पुनि, सो रस जान महेश ॥१४॥

बरणौं एक रुचिर इतिहासा ❀ तुलसीदास जो कीन्ह तमासा ॥
द्राविड़ अरु काशी महिपाला ❀ कहुँ एकत्र रहे कछु काला ॥
अतिशय प्रीति बढ़ी दुहुँ माहीं ❀ मनमें कपट लेश कछु नाहीं ॥